18

आप किस मार्ग पर जा रहे हैं

(मत्ती 7:13-20)

बाइबल की शिक्षा के अनुसार जीवन में निवासियों के बजाय हम मुसाफिरों के रूप में सफर करते हैं। सवाल यह है कि ''हम किस मार्ग पर जा रहे हैं?'' मुसाफिर की पहली चिन्ता गति नहीं बल्कि मंजिल होती है। ''तेज़ी से तरक्की सही दिशा में नहीं है तो इसे बुरा और कुछ नहीं है।''[1] मैं संसारभर में खो गया था। मैंने कानून द्वारा ठहराई अधिकतम गति से मजे से जा रहा था कि पता चला मैं तो गलत रास्ते पर हूं। पहाड़ी उपदेश के अन्त के निकट पहुंचने पर हम यीशु को हमसे यह कहते हुए पाते हैं कि हम आत्मिक रूप में सफर कर रहे हैं।

आप किस मार्ग पर जा रहे हैं (7:13, 14)

पहला विचार तो यह है कि आप किस *मार्ग* पर चल रहे हैं? मत्ती 7:13, 14 में यीशु ने दो मार्गों की बात की:

> सकेत फाटक से प्रवेश करो। क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि संकेत है वह फाटक जो और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।

इन आयतों में हमें दो अन्तर मिलते हैं।

दो मार्ग

यात्री के सामने दो मार्ग हैं। एक *मार्ग चौड़ा* है। अनुवादित शब्द ''चौड़ा'' (*euruchoros*) का अर्थ ''खुला, बड़ा'' है।[2] इस मार्ग पर विचारों को फैलाने के लिए जगह है। इसकी कई गलिया हैं:

- एक गली सफलता के नशे में डूबे कठिन परिश्रम करने वालों की और एक गली आनन्द से भरे आलसियों की है।
- एक गली नैतिक तौर पर अच्छे लोगों के लिए है जो उद्धार के लिए अपनी ही भलाई पर निर्भर हैं और एक गली उनके लिए है जो अनैतिक भक्तिहीन जीवन बिताते हैं।
- एक गली विवेकी धार्मिक लोगों के लिए है जिन्हें लगता है कि उनका उद्धार अपनी मनुष्य की बनाई विधियों से हो जाएगा, और एक गली अविश्वासियों, संदेहवादियों, अज्ञेयवादियों और नास्तिकों के लिए है।

इस मार्ग पर प्रतिरोध या सीमा नहीं है। आप जो चाहें वही बन सकते हैं, और जो चाहें कर सकते हैं। RSV में हैं ''सरल है वह मार्ग, जो विनाश को पहुंचता है।''

फिर *सक्रा* मार्ग आता है। अनुवादित शब्द ''सकरा'' (thlibo का एक रूप) का अर्थ ''दबाना''[3] इकट्ठे दबाना, ''निचोड़े'' जाना है।[4] पिछले मार्ग के विपरीत, यह खुला या बड़ा सा नहीं है। RSV में है ''कठिन है वह मार्ग, जो जीवन को पहुंचाता है,'' यीशु ने जीवन के मार्ग को कभी आसान रास्ता नहीं बताया।[5]

जीवन का मार्ग सकरा है, पर केवल इसलिए नहीं कि यह यीशु ने कहा है। यह सकरा है क्योंकि सच्चाई का स्वभाव ऐसा ही है। सच्चाई सकरी ही होती है। दो और दो हमेशा चार ही होते हैं। वे कभीं पांच नहीं होते। वे कभी पांच या सात नहीं बनते; चार तो होते हैं। सच्चाई का सकरापन यही है। सूर्य पूर्व में ही उदय होता है। यह कभी पश्चिम, उत्तर या दक्षिण से उदय नहीं होता। यह पूर्व में ही उदय होता है। सच्चाई का सकरापन यही है।

आमतौर पर हमें ''सकरा'' शब्द पसन्द नहीं होता। ''तंगदिल'' कहलाना अपना अपमान कराना है। एक साल मसीही कॉलेज की लेक्चरशिप में एक प्रदर्शक ने छह इंच लम्बे पर केवल एक इंच चौड़े नोट पैड पकड़ा। ऊपर ''तंगदिल लोगों के लिए नोट पैड'' लिखा हुआ था। लेक्चरशिप में भाग लेने वाले कई लोगों को लगा कि यह मनोरंजन जैसा है क्योंकि हमें मालूम है कि ''तंगदिल'' कहलाने वाला कैसा बुरा लगता है।

आज की पुकार सहनशीलता है। सहनशील होने का समय होता है पर असहनशील होने का भी समय होता है। जॉर्ज बी. बेले ने लिखा:

> हमें एक-दूसरे के प्रति अधिक सहनशील होने की आवश्यकता है। हमें विचारों के और सहनशील होना आवश्यक है। पर एक अर्थ है जिसमें असहनशील होना बहुत अच्छा और भला है। जब परमेश्वर की निंदा होती है तो हमें असहनशील होना चाहिए जब परमेश्वर के वचन पर सवाल उठाया जाता है तो हमें असहनशील होना चाहिए। जब विश्वास पर हमला होता है, जब सच्चाई की जगह विचार को दी जाती है, जब ईश्वरीय सच्चाइयों का मज़ाक उड़ाया जाता है तब हमें असहनशील होना चाहिए।[6]

जीवन का मार्ग सकरा हो सकता है। पर यह काफी चौड़ा है। यह इतना चौड़ा है कि इसमें ''हर पीढ़ी और युग, भाषा और उपभाषा, जाति और राष्ट्रीयता वाले लोग''[7] जो यीशु के पीछे चलने को तैयार हों, आ सकते हैं (देखें 1 यूहन्ना 1:7)। यह इतना चौड़ा है कि प्रभु के साथ हाथ में हाथ डालकर चला जा सकता है (देखें कुलुस्सियों 2:6)। आखिर यह उसका मार्ग है (देखें यूहन्ना 14:6)।

एक चौड़ा मार्ग और एक सकरा मार्ग, हमारे पास केवल यही विकल्प हैं। संसार को वह पसन्द अच्छी नहीं लगती। कुछ लोग ''जीवन की ओर जाने वाले कई मार्गों'' की बात करते हैं। अन्य पूरी मनुष्यजाति को इकट्ठे करते हुए कहते हैं कि वास्तविकता में एक ही मार्ग है यानी सभी लोग अनन्त उद्धार के मार्ग पर ही चल रहे हैं। परन्तु यीशु ने लोगों का पसन्दीदा विकल्प नहीं दिया। उसने कहा कि दो मार्ग हैं, जिनमें एक चौड़ा है और एक सकरा और हर व्यक्ति को उनमें से एक को चुनना है।

दो फाटक

फिर यीशु ने कहा कि दो फाटक है। एक *चौड़ा फाटक* है। हमारे वचन पाठ के अनुसार दोनों फाटकों में ''प्रवेश'' बंद होना है। परन्तु यह फाटक इतना चौड़ा है कि अधिकतर लोगों को पता ही नहीं चलता कि वे इसमें कब अन्दर आ गए। यदि आप इसके प्रवेश द्वार पर खड़े हो सकें तो आप को दूर तक दाहिने और बाएं देखने पर कहीं भी चौकी नहीं मिलेगी।

इस द्वार में प्रवेश करना कठिन नहीं है। और प्रवेश करते हुए अपने साथ ''सामान'' की मात्रा की सीमा भी नहीं है। आपको कुछ भी पीछे छोड़ने की आवश्यकता नहीं है, आप अपने पाप, स्वार्थ अपने आप में धर्मी होना, अपने घमण्ड और अपनी पूर्व धारणाओं को साथ ला सकते हैं।

फिर *छोटा अर्थात सकरा फाटक* है। KJV में ''स्ट्रेट गेट'' है। हम में से कइयों ने अनन्त जीवन के मार्ग को ''सीधा और सकरा'' के रूप में सुना है। परन्तु KJV में सीधा के लिए ''s-t-r-a-i-g-h-t'' नहीं बल्कि ''s-t-r-a-i-t'' है। ''Strait'' एक लातीनी शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है ''तंग।'' आज इस शब्द का इस्तेमाल नहर के लिए किया जाता है, जो दो बड़ी नदियों को मिलाती है–जैसे स्ट्रेटस ऑफ गिबरलतर, जहां भूमध्य सागर अटलांटिक सागर से मिलता है।

आयत 13 यूनानी शब्द stenos का अर्थ ''तंग''[8] आयत 14 में इस शब्द का अनुवाद ''सकेत'' है। यह फाटक छोटा है इस कारण आप इसमें से अचानक इधर–उधर घूम नहीं सकते। इसे खोना आसान है इसलिए आपको इसे तलाश करना पड़ेगा। इसमें संयोग से नहीं बल्कि पसन्द के द्वारा प्रवेश किया जाता है। यह फाटक तंग है इस कारण एक बार इसमें केवल एक ही व्यक्ति प्रवेश कर सकता है। चौड़े फाटक में भीड़ में से प्रवेश किया जा सकता है लेकिन सकरे फाटक में केवल एक एक करके ही प्रवेश किया जा सकता है। इसके अलावा यह तंग है इस कारण आपको प्रवेश करने के लिए अपना व्यक्तिगत ''सामान'' छोड़ना पड़ेगा।[9] यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो *अपने आप का इन्कार करे* और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले'' (मत्ती 16:24)।

एक और जगह यीशु ने प्रकट किया कि जीवन के फाटक में कैसे प्रवेश करना यानी मसीही कैसे बनना है। उद्धार की हर शर्त में अतीत की किसी न किसी बात को छोड़ना है।

हमें यीशु में *विश्वास* करना है (यूहन्ना 8:24)। यह फाटक उनके लिए जो किसी और उद्धारकर्त्ता में विश्वास लाना चाहते हैं बहुत सकरा है।

हमें अपने पापों से *मन फिराना* आवश्यक है (लूका 13:3)। अपनी पुरानी जीवन शैली को बनाए रखने का निश्चय करने वालों के लिए भी यह फाटक बहुत सकरा है।

हमें मनुष्यों के सामने उसके नाम का *अंगीकार* करना आवश्यक है (मत्ती 10:32)। यह फाटक उनके लिए जो यीशु के लिए लोगों के बीच झिझकना जारी रखते हैं बहुत तंग है। हमें उद्धार पाने के लिए *बपतिस्मा* (पानी में डुबकी) लेना आवश्यक है (मरकुस 16:16)। यह फाटक उनके लिए जो उसकी आज्ञा मानने को तैयार नहीं है, बड़ा की सकरा है। यीशु ने कहा, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15)।

फिर से मैं यह ज़ोर देकर कहता हूं कि यह मसीह का मार्ग है। उसने कहा, ''द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा'' (यूहन्ना 10:9क)। उन सबसे जिन्होंने

प्रवेश नहीं किया वह कहता है ''हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; *मैं* तुम्हें विश्राम दूंगा'' (मत्ती 11:28)। यह फाटक छोटा और सकरा है पर यह किसी के लिए भी जो पास आने के लिए तैयार काफी बड़ा और चौड़ा है।

दो भीड़ें

हमारा वचन पाठ दो भीड़ों यानी लोगों के दो समूहों की बात भी करता है। एक समूह को ''बहुतेरे'' कहा गया है: ''बहुतेरे हैं, जो उससे प्रवेश करते हैं'' यानी चौड़े फाटक से जाने वाले ''बहुतेरे'' लोग चाकल मार्ग पर हैं। चाकल मार्ग बहुतेरे लोगों का यानी बहुतायत से जाने वाले लोगों का मार्ग है। इस मार्ग का लक्ष्य है ''हर कोई कर रहा है।'' जब मूसा ने इस्राएलियों को निर्देश दिया तो उसने कहा, ''बुराई करने के लिये न तो बहुतों के पीछे हो लेना'' (निर्गमन 23:2क)। उसे यह आज्ञा क्यों देनी पड़ी? क्योंकि भीड़ के पीछे चलना ''स्वाभाविक'' काम लगता है।

''बहुतेरे'' नामक समूह के विपरीत *''थोड़े''* नामक समूह है। यीशु ने कहा, ''क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग, जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।'' सुझाव दिया गया है कि सम्भवतया यह [यीशु की] सबसे उपेक्षित बात है।[10]

''थोड़े'' शब्द एक तुलनात्मक शब्द है। बहुत पहले मैंने एक आदमी की कविता सुनी थी जो उन लोगों की संख्या कम करता जा रहा था जो बचाए जाएंगे। उसकी अन्तिम पंक्तियां कुछ इस प्रकार थी: ''बस मैं और तू ही रह जाते हैं। और कई बार मुझे तेरा भी शक होता है।'' हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि ''थोड़े'' का अर्थ ''लगभग कोई नहीं'' है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ''एक बड़ी भीड़ जिसे कोई गिन नहीं सकता था'' (7:9) के रूप में दिखाया गया है। तौ भी यह विशेष समूह चौड़े मार्ग पर चलने वाले बहुतों की तुलना में थोड़ा ही है।

विश्वासी लोग सदा से ही अल्प संख्या में रहे हैं। नूह के समय में ''थोड़े लोग अर्थात आठ प्राणी'' बच पाए थे (1 पतरस 3:20)। युद्ध करने की आयु के छह लाख पुरुष ही मिस्र देश से निकले थे (देखें निर्गमन 12:37) जिनमें से केवल दो लोग यानी यहोशू और कालेब ही प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश कर पाए थे। पुराने और नये नियम दोनों में ही यह सूचना दी गई है कि केवल ''बचे हुए'' लोग ही उद्धार पाएंगे (देखें यशायाह 10:21, 22; रोमियों 11:5)। यीशु ने एक दृष्टांत का समापन इन शब्दों के साथ किया: ''क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं'' (मत्ती 22:14)। आज भी परमेश्वर के लोग अल्पसंख्या में हैं।

मेरे भाई कोय का कहना कि मत्ती 7 अध्याय का संदेश यह है कि ''हर कोई परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करेगा।''[11] संसार यह मानने को तैयार नहीं है। हमारे यहां प्रसिद्ध विश्वास यह पाया जाता है कि जब भी कोई मरता है–चाहे कोई भी हो अच्छा या बुरा–वह ''ज्योति में चला जाता है,'' जहां प्रेम करने वाले लोग उसके स्वागत की राह देख रहे हैं। यीशु ने कहा कि ऐसा नहीं है। उसके अनुसार, संसार ज्योति में जाने के बजाय (प्रकाशितवाक्य 22:5) ''बाहर अन्धियारे'' की ओर जा रहा है (मत्ती 8:12; 22:13; 25:30)।

''थोड़े'' लोगों में से एक होना निराशाजनक हो सकता है। मैंने कलीसिया के लोगों को यह कहते सुना है, ''पर बाइबल इस बात पर बिल्कुल स्पष्ट है। *हर किसी को* दिखाई क्यों नहीं

देता?'' मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। प्रभु ने कहा कि ऐसा होगा–कि हर कोई सच्चाई को देखेगा या समझेगा या मानेगा *नहीं*। ऐसा ही होता है। सकेत मार्ग तंग मार्ग है और आमतौर पर यह कठिन मार्ग होता है। यह सुनसान मार्ग भी हो सकता है। ''एक मिनट रुकना'' कोई कह सकता है ''मुझे नहीं लगता कि मैं उस मार्ग पर थोड़े लोगों में से एक बनने को तैयार हूं!'' वह निर्णय लेने से पहले चौथे अन्तर पर विचार करें।

दो मंजिलें

चाकल मार्ग ''*विनाश* को पहुंचाता है।'' अनुवादित शब्द ''विनाश'' (*apollumi* से) का अर्थ ''पूरी तरह से नष्ट करना'' है। परन्तु ''... विचार सत्यनाश का नहीं बर्बाद करने का है, यानी प्राण की हानि नहीं बल्कि बेहतरी की है।''[12] इस जीवन में किसी का चरित्र छिन सकता है। इस जीवन के बाद प्राण की हानि होती है। सुलैमान ने लिखा है ''ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है'' (नीतिवचन 14:12; देखें 16:25)। ''मृत्यु'' शब्द ''अलगाव'' का संकेत देता है। आत्मिक मृत्यु परमेश्वर से अलगाव या दूरी है (देखें यशायाह 59:2)। ''दूसरी मृत्यु'' (प्रकाशितवाक्य 20:14; 21:8) परमेश्वर की उपस्थिति से सदा की दूरी है (2 थिस्सलुनीकियों 1:8, 9)। *आरम्भ में* इसकी कीमत चुकाने की बात से कई लोगों को सकेत मार्ग कठिन लगता है, पर चौड़े मार्ग पर चलने वालों द्वारा *अन्त में* चुकाई जाने वाली कीमत की तुलना में वह कुछ भी नहीं है।

चौड़ा मार्ग विनाश को पहुंचाता है, पर सकेत मार्ग ''जीवन को पहुंचाता है।'' यीशु ने कहा, ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10ख)। यदि आत्मिक मृत्यु परमेश्वर से अलगाव है तो आत्मिक जीवन परमेश्वर से मिलाप है अर्थात उसके साथ संगति है। यूहन्ना 17 अध्याय में अपनी महान प्रार्थना में यीशु ने कहा, ''अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें'' (आयत 3)। तंग या सकेत मार्ग पर परमेश्वर और मसीह के साथ सहभागिता होने लगती है। स्वर्ग में यह पूर्ण होती है।

कई बार हम चर्चाएं सुनते हैं कि प्रभु की आज्ञा मानने के लिए लोगों को प्रभावित करने के लिए हमें नकारात्मक प्रेरणा या सकारात्मक प्रेरणा का इस्तेमाल करना चाहिए या नहीं। एक अर्थ में उसने विनाश की ओर जाने वाले मार्ग की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा, ''आप उस मार्ग पर *नहीं* जाना चाहते।'' फिर उसने उस मार्ग की ओर ध्यान दिलाया जो जीवन की ओर पहुंचाता है, यह संकेत देते हुए ''आप उस मार्ग पर *जाना* चाहते हैं।''

हमारे पास चार भिन्नताएं हैं पर विकल्प केवल दो हैं। कोई या तो सकेत मार्ग पर है जो जीवन को पहुंचाता है या चाकल मार्ग पर जो विनाश को पहुंचाता है। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा:

> ... यीशु के अनुसार केवल दो ही मार्ग हैं, कठिन और आसान (कोई बीच का रास्ता नहीं है) जिनमें दो फाटकों से प्रवेश किया जाता है, सकेत और चाकल (कोई और फाटक नहीं है), जिसे दो भीड़ों द्वारा लताड़ा गया है बड़ी और छोटी (कोई बीच का समूह नहीं है), दो मंजिलों अर्थात विनाश और जीवन को जाते हैं (कोई तीसरा विकल्प नहीं है)।[13]

आप किसके निर्देशों को मान रहे हैं (7:15-20)

इस प्रश्न का कि आप किस मार्ग पर जा रहे हैं? उत्तर देने के लिए आपको यह पता होना आवश्यक है कि आप किस मार्ग पर चल रहे हैं परन्तु दूसरा विचार की दूसरी बात यह भी है कि आप किसके निर्देशों का पालन कर रहे हैं निर्देश देने वाला केवल यीशु ही नहीं है। असंख्य आवजें पुकार रही हैं, ''इधर-जाओ और उधर जाओ, यह करो और वह करो।'' इस लिए यीशु ने उन लोगों के बारे में चौकस करते हुए जो लोगों को गुमराह कर सकते हैं दो मार्गों की शिक्षा दी।

दिशा देने वालों की दो किस्में

जैसे दो मार्ग हैं वैसे ही दिशा देने वाले दो प्रकार के हैं, यह वचन केवल गलत दिशा देने वालों की बात करता है, पर इसमें यह भी संकेत हैं कि अच्छे दिशा देने वाले भी हैं।

दिशा देने वालों को ''भविष्यवक्ता'' कहा जाता है। ''भविष्यवक्ता'' के लिए अंग्रेजी शब्द ''prophet'' यूनानी भाषा के शब्द (*prophetes* से) का लिप्यंतरण है, जिसका अर्थ हैं ''जो स्पष्ट बोलता है।''[14] आमतौर पर यह परमेश्वर के लिए ''स्पष्ट बात करने'' वाले यानी परमेश्वर के प्रवक्ता के लिए इस्तेमाल होता है। पहली सदी में ये लोग प्रवक्ता होते थे जिन्हें अपना संदेश सीधे परमेश्वर से मिलता था; परन्तु उनकी जगह शिक्षा देने वालों को लगाया गया, जो परमेश्वर के लिखित वचन से संदेश पाते हैं।[15] उन सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद जो तीमुथियुस को दी गई पौलुस की नसीहत को मानते हैं: ''तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा'' (2 तीमुथियुस 4:2)!

दुख की बात है *गलत दिशा देने वाले* भी हैं जिन्हें यीशु ने झूठे भविष्यवक्ता कहा। ये लोग परमेश्वर के लिए बोलने का दावा करते थे, शायद परमेश्वर की प्रेरणा होने का दावा भी करते थे। इनके विषय में यीशु ने कहा:

> झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्त में फाड़ने वाले भेड़िए हैं (मत्ती 7:15)।

''झूठे'' शब्द ''झूठ बोलना'' के लिए यूनानी शब्द (*pseudes*) से लिया गया है।[16] यीशु ने कहा कि हमें झूठ बोलने वाले शिक्षकों से सावधान रहने की आवश्यकता है, जो हमें धोखा देते हैं।

यदि आपके घर में एक प्यारी सी बिल्ली है तो गेट के बाहर ''**कुत्ते से सावधान!**'' का बोर्ड लगाने का कोई मतलब नहीं है।[17] वास्तव में यीशु को झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहने की बात इस बात का संकेत है कि उसके समय में वे थे और इसका अर्थ यह भी है कि वे हमेशा रहेंगे। पहाड़ी उपदेश देते समय हो सकता है कि यीशु के मन में शास्त्री और फरीसी रहे हों पर झूठे शिक्षकों का आरम्भ या अन्त इन शिक्षकों के साथ नहीं हो जाता। बाद में जब यीशु ने बताया कि यरूशलेम का विनाश कैसे होगा तो उसने कहा, ''बहुत से झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे'' (मत्ती 24:11; देखें आयतें 5, 24)। पौलुस ने झूठे शिक्षकों के विषय में लिखा जो ''पृथक सुसमाचार'' ले आए थे (गलातियों 1:6-9)। 2 तीमुथियुस में उसने

दो झूठे शिक्षकों के नाम बताए और कहा कि वे कुछ लोगों के विश्वास को बिगाड़कर ''सत्य से भटक गए हैं'' (2:17, 18)। पतरस ने मसीही लोगों को बताया कि ''... [यहूदी] लोगों में झूठे भविष्यवक्ता थे उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करने वाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे'' (2 पतरस 2:1क)।

कुछ झूठे शिक्षक स्वयं गुमराह हैं (देखें 7:21-23), परन्तु कुछ नहीं हैं। कोई जानबूझकर झूठा शिक्षक क्यों बनेगा। मैं लोगों के मनों को या उनकी मंशाओं को नहीं जान सकता। परन्तु कई संभावनाएं ध्यान में आती है।

पैसा। KJV से शब्द का इस्तेमाल करें तो कुछ शिक्षक और प्रचारक केवल ''भाड़े पर काम करने वाले'' (देखें यूहन्ना 10:12, 13) यानी वे लोग हैं जो पैसे के लिए काम करते हैं। KJV का एक और नकारात्मक विवरण ध्यान में आता है: ''जिनका परमेश्वर उनका पेट है'' (फिलिप्पियों 3:19)।

प्रतिष्ठा। आरम्भिक कलीसिया में स्पष्टतया कुछ लोग शिक्षकों के रूप में अपनी पहचान उस सम्मान और प्रतिष्ठा के कारण बनाना चाहते थे जो इससे मिलती है। याकूब ने यह चेतावनी दी: ''हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो, कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे'' (याकूब 3:1)।

पावर। दियोत्रिफुस की तरह कुछ लोग मण्डली ''में बड़ा बनना'' चाहते हैं (3 यूहन्ना 9)। वे अपनी इच्छा दूसरों पर थोपना चाहते हैं।

गलती से हो या जानबूझकर, मंशा जो भी हो हमारा वचन पाठ हमें झूठे भविष्यवक्ताओं की दो बातें बताता है पहली यह कि वे *खतरनाक* हैं। यीशु ने उन्हें ''भेड़िए'' कहा। कलीसिया परमेश्वर का झुंड है (प्रेरितों 20:28), और भेड़िए भेड़ों के स्वाभाविक शत्रु हैं (यूहन्ना 10:12, 13)। इन खून के प्यासे परभक्षियों के सामने भेड़ें लाचार होती हैं। पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को चेतावनी दी, ''... मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे'' (प्रेरितों 20:29)। यीशु ने उन्हें *''फाड़ने वाले* [*harpax*] *भेड़िए''* यानी पागलपन की हद तक पहुंचे भूखे भेड़िए कहा। क्या आप दहाड़ते भेड़ियों के झुंड, तीखी नज़रों, नुकीले दांतों वाले, लार टपकाते भेड़ियों की कल्पना कर सकते हैं, जो आक्रमण करने को तैयार हैं?

झूठे शिक्षक न केवल खतरनाक हैं बल्कि वे *धोखा देने वाले* भी हैं। आमतौर पर वे ''भेड़ के भेष में'' आते हैं। कइयों ने अनुमान लगाया है कि भेड़ का भेष भविष्यवक्ता के चोगे को कहा गया है (1 राजाओं 19:19)। परन्तु यीशु सम्भवतया लोकोक्ति का इस्तेमाल कर रहा था जिसका अर्थ है कि फाड़ने वाले भेड़िए हमेशा फाड़ने वाले भड़ियों जैसे नहीं लगते आमतौर पर वे भेड़ों जैसे लगते है जिनसे कोई खतरा न हो। पौलुस ने कहा कि झूठे शिक्षक अपने आप को ''मसीह के प्रेरितों'' और ''धर्म के दासों'' के रूप में दिखा सकते हैं (2 कुरिन्थियों 11:13, 15)।

झूठे शिक्षक अपने आने की घोषणा ''झूठा शिक्षक आया है!'' शब्दों से नहीं करते वे अपने गले पर या अपनी छाती पर ''झूठा शिक्षक'' की पट्टी नहीं लगाते, आमतौर पर वे सही वस्त्र पहनते हैं। उनके पास धार्मिक शब्द भण्डार है। वे वचन से बता सकते हैं।[18] लग सकता है कि वे सही शब्द बोल रहे हैं।[19] यह सब उन्हें और भी खतरनाक बना देता है। मसीही लोगों को लोगों की अच्छी बातों पर विश्वास करना सिखाया गया है और यही बात उन्हें झूठे शिक्षकों के सामने

कमज़ोर बना सकती है। यहूदा ने कुछ झूठे शिक्षकों की बात करते हुए कहा कि वे ''चुपके से हम में आ मिले हैं'' (यहूदा 4)। ''चुपके से आ मिले'' का अनुवाद *pareisduno* से किया गया है जिसका अर्थ है ''एक ओर से प्रवेश करना।''[20] किसी ने कहा है कि वे ''साइड वाले दरवाज़े से'' घुस आते हैं।[21]

झूठे शिक्षकों को कैसे पहचानें

यदि झूठे शिक्षक इतने छलिए हैं तो हम उन्हें आसानी से कैसे पहचान सकते हैं?[22] यीशु ने अगले भाग में बताया कि कैसे। अपनी उपमा को चारागाह से फलों के बाग में बदलते हुए उसने कहा ''उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे'' (आयत 16क; देखें आयत 20)। अनुवादित शब्द ''पहचान'' (*epiginosko),* ''जानना'' (*ginosko*) के लिए शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ उपसर्ग *epi* से गूढ़ हो जाता है। इसका अर्थ, ''पूरी तरह से जानना'' है।[23] अन्य शब्दों में झूठे शिक्षकों को *सचमुच में* पहचानने का ढंग उनके फल को देखना है।

यीशु ने लोगों के प्रकृति में फल को पहचानने के ढंग की बात की: ''क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?'' (आयत 16ख)। क्या आप ''लोगों के अंगूर तोड़ने के लिए जंगली झाड़ियों में से निकलने या अंजीर ढूंढ़ने के लिए झाड़ियों में अपनी टोकरी ले जाने की कल्पना'' कर सकते हैं?[24]

उसने आगे कहा:

> इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है (आयतें 17, 18)।

''अच्छा पेड़'' वह होता है जो किसी फलदार पेड़ से उम्मीद किए जाने वाला फल यानी खाने योग्य फल दे। ''बुरा पेड़'' वह है जो खाने योग्य फल नहीं देता।[25] इसका अर्थ यह नहीं है कि अच्छा पेड़ कभी अखाद्य फल *नहीं* देता। सेब के अच्छे फल में कुछ कीड़ों वाले सेब हो सकते हैं इसी प्रकार बुरे पेड़ पर कई बार इसकी टहनियों पर अच्छा फल भी हो सकता है। यीशु के ध्यान में हर पेड़ के द्वारा दिए जाने वाले फल की आम बात थी।

फल वाली परख को हम उन पर कैसे लागू कर सकते हैं जो हमें सिखाते हैं? ऐसा करने के लिए हमें यह समझने की आवश्यकता है कि ''फल'' की कई किस्में हैं और ''फल की परख'' कई तरह से होनी आवश्यक है। उदाहरण के लिए *डॉक्ट्रिन* का टैस्ट है कि कोई क्या सिखाता है। इब्रानियों की पुस्तक से वाक्यांश उधार लें तो हमें उसके फल को अपने होंठों से चैक करना आवश्यक है (देखें इब्रानियों 13:15)। यूहन्ना ने अपने पाठकों को धोखा देने की कोशिश करने वाले कुछ लोगों के बारे में लिखा (देखें 1 यूहन्ना 2:26) और फिर कहा, ''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)।[26] उन्हें कैसे परखें? जो कुछ वे सिखाते हैं उसे परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई सच्चाई से मिलाकर (प्रेरितों 17:11)।

आज संसार में झूठी शिक्षाओं की बाढ़ आई हुई हैं। कई बार तो ऐसा लगता है जैसे हर दिन एक नई शिक्षा निकल आती है। कई बार मुझसे पूछा जाता है, ''हम इन सब झूठी बातों से कैसे निपट सकते हैं?'' मेरा उत्तर होता है लगातार परमेश्वर के वचन को पढ़कर उसका अध्ययन करके और उस पर विचार करके। यदि परमेश्वर का वचन आपके प्राण में बस चुका है तो आप को एकदम से गलत शिक्षा सुनने पर उसकी पहचान हो जाएगी। डॉक्ट्रिन के टेस्ट से बड़ा कोई टेस्ट नहीं है। यदि कोई व्यक्ति वचन नहीं सिखा रहा है तो वह झूठा शिक्षक है।

परन्तु हम झूठे शिक्षक को हमेशा उसकी शिक्षा से नहीं पहचान सकते। शैतान वचन में से बता सकता है (मत्ती 4:6)। कई बार झूठे शिक्षक की शिक्षा की उतनी समस्या नहीं होती, जितनी उस बात की जो वह *सिखाने में* नाकाम रहता है।[27] इसलिए हमें अतिरिक्त फल को चैक करने की आवश्यकता है।

मैं इसके बाद *आचरण* का टेस्ट जोड़ूंगा कि हमें सिखाने वाले के *जीवन के फल* की जांच करनी भी आवश्यक है। हमें यह पूछना चाहिए कि जो कुछ वह करता है उसमें ''आत्मा का फल'' है या नहीं (गलातियों 5:22, 23)। ऐतिहासिक दस्तावेज़ों के अनुसार, झूठे भविष्यवक्ता/शिक्षक एक बड़ी परेशानी का कारण थे। बाइबल से बाहर के एक लेख में जिसे डिडेक कहा जाता है,[28] जो दूसरी से तीसरी शताब्दी का माना जाता है, में झूठे शिक्षकों की पहचान करने पर एक भाग है।[29] मसीही लोगों से घूमने वालों प्रचारकों को घर देने की अपेक्षा की जाती थी। पर इस दस्तावेज में जोड़ा गया है, ''वह एक दिन तक रहेगा, और आवश्यक हुआ तो एक और दिन भी पर यदि वह तीन दिन रहे तो वह झूठा नबी है'' घूमने वाले प्रचारक खाने के लिए मांग सकते थे पर डिडेक ने चौकस किया, ''यदि वह धन मांगे तो झूठा नबी है।''[30] आज भी हमें बड़े ध्यान से यह जांच करने की आवश्यकता है कि किसी सिखाने वाले का जीवन कैसा है और वह क्या करता है।

परन्तु झूठे शिक्षक को हमेशा उसके जीवन से पहचाना नहीं जा सकता। कुछ झूठे शिक्षकों का जीवन अच्छा यानी नैतिक जीवन होता है। तो फिर हम ऐसे को कैसे पहचान सकते है। अन्तिम परख परिणामों का टैस्ट है कि उसकी शिक्षा से कैसा फल *मिलता* है? परमेश्वर जो चाहता है वह ''चैन के साथ धर्म का प्रतिफल'' है (इब्रानियों 12:11)। याकूब ने लिखा है कि ''और मिलाप करने वालों के लिए धार्मिकता का फल मेल-मिलाप के साथ बोया जाता है'' (3:18)। दुख की बात है कि हर बीज (शिक्षा) धर्म का फल नहीं देता और न ही यह चैन में बोया जाता है। गलत प्रकार की शिक्षा के कई नकारात्मक परिणाम 2 तीमुथियुस 2 में मिलते हैं।

अभक्ति को बढ़ावा: सांसारिक गपशप ''अभक्ति में बढ़ा'' सकती है (आयत 16)।

विश्वास में उलट फेर: झूठी शिक्षा ''सड़े-घाव की नाईं फैलता'' सकती है और ''विश्वास को उलट पुलट कर'' सकती है (आयतें 17, 18)।

झगड़ों को प्रोत्साहन: ''मूर्खता, और अविद्या के विवादों से ... झगड़े होते हैं'' (आयत 23)।

हमें इस प्रकार के प्रश्न पूछने आवश्यक हैं: इस व्यक्ति की शिक्षा के कारण क्या लोग प्रभु के निकट आ रहे हैं? क्या उनका जीवन और भक्तिपूर्ण बन रहा है? क्या वे परमेश्वर के वचन के और वफ़ादार बन गए हैं? क्या वे एक दूसरे के प्रति और प्रेम दिखाते हैं?

तीसरे टेस्ट में समय लगता है क्योंकि फल धीरे धीरे लगता है। ऐसा ही होता है, जिस कारण हमें किसी को भी झूठा शिक्षक होने का नाम जल्दबाजी में नहीं देना चाहिए। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लिखा है कि ''हम जल्दबाजी में न्याय न करें, न लापरवाही से या घिसे पिटे कामों से, क्योंकि बुरे फल के कुछ नमूने बुरे पेड़ों पर [लगते हैं]।''[31] जैसा पहले कहा गया है कि सेब के अच्छे पेड़ पर भी कीड़े वाला सेब हो सकता है। इसलिए इस टैस्ट को करने के लिए धीरज की आवश्यकता है, पर हम आचरण के टैस्ट को नज़रअन्दाज न करें। यह बहुत आवश्यक है।

इससे क्या फर्क पड़ता है?

हमारे धार्मिक अगुवे सही हों या गलत इससे क्या फर्क पड़ता है? झूठे शिक्षक चौड़े रास्ते पर चल रहे हैं जो विनाश को पहुंचाता है (देखें आयत 13)। यीशु ने कहा:

> जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में डाला जाता है (आयत 19; 3:10 से तुलना करें)।

मेरे पड़ोस में पुराने पेड़ों की कतारों वाली गलियां हैं। यह पेड़ मुख्यतया सजावटी हैं। परन्तु फलस्तीन में पेड़ आमतौर पर सजावट के लिए नहीं बढ़ते थे। वे इंधन या चीज़ों को बनाने के लिए लकड़ी उपलब्ध कराने के लिए बड़े होते थे, पर मुख्यतया वे फल के लिए उगाए जाते थे। यदि फल का कोई पेड़ खाने योग्य फल न दे, तो यह अच्छे पेड़ों के लिए आवश्यक पौष्टिकता ज़मीन से खींच लेता था। इसलिए फल न देने वाले पेड़ों को काटकर इंधन के लिए इस्तेमाल किया जाता था। बेशक ''बुरे पेड़'' झूठे नबियों को कहा गया है। यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि झूठे शिक्षकों को नरक की आग में दण्ड दिया जाएगा। ''झूठे शिक्षकों'' के आने की बात लिखते हुए पतरस ने कहा कि ऐसे लोग ''अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे'' (2 पतरस 2:1)।

झूठे शिक्षकों के पीछे चलने वालों का क्या होगा? वे भी उसी रस्ते पर हैं जो उसी मंजिल तक ले जाता है। यीशु ने कहा कि ''अंधा यदि अंधे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड्हे में गिर पड़ेंगे'' (मत्ती 15:14)। हम उसकी बात इस प्रकार ले सकते हैं कि यदि कोई झूठा भविष्यवक्ता भोले भाले व्यक्ति की अगुआई करता है, तो दोनों ही अनन्त विनाश की ओर जा रहे हैं। इसी लिए हमारे लिए सही आत्मिक अगुओं की बात सुनने से फर्क पड़ता है, जो कि अनन्तकालिक फर्क है।

हम में से हर किसी की हर शिक्षक की शिक्षा को परखने की जिम्मेदारी है। हमें चोंच खुली वाले नन्हें पक्षियों की तरह नहीं होना चाहिए, जो उनकी मां उनके मुंह में जो भी डाले उसे खाने को तैयार हों। लूका ने बिरिया के लोगों की प्रशंसा की क्योंकि ''उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्र में ढूंढते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं'' (प्रेरितों 17:11)। ''ये बातें'' पौलुस की शिक्षा को कहा गया है। उन्होंने यह देखने के लिए कि जो कुछ पौलुस सिखाता है क्या वह वचन के अनुसार है भी या नहीं उसे पवित्र शास्त्र में से देखा! आपको और मुझे भी जो हमें सिखाते हैं उनके सम्बन्ध में ऐसा ही करना है। याद रखें कि यूहन्ना ने कहा कि ''आत्माओं को *परखो,* कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)।

सारांश

अन्त में मैं फिर पूछता हूं, ''आप किस मार्ग पर चल रहे हैं ?'' दो रास्ते हैं: एक चौड़ा रास्ता है जो विनाश तक ले जाता है और एक तंग रास्ता है जो जीवन तक ले जाता है। आप किस रास्ते पर चल रहे हैं ? केवल दो ही तरह के अगुवे हैं जिसमें एक झूठा है और एक सच्चा। आप कैसे अगुवे के पीछे चल रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यीशु हम से किस मार्ग पर चलने की इच्छा रखता है या कैसे अगुवे की सुनने और मानने की इच्छा रखता है।

देखा गया है कि मत्ती 7:13 में ''से प्रवेश करो'' शब्द केवल ताड़ना नहीं बल्कि निमन्त्रण है। हमारे वचन पाठ में यीशु हमें केवल चेतावनी नहीं देता बल्कि वह हमारा स्वागत भी करता है।[32] आज भी उन सब से जो सुनते हैं ''सकेत फाटक से प्रवेश'' करने का आग्रह करता है।

टिप्पणियां

[1]क्लोसिव जी. चैप्पल, *दि सरमन ऑन दि माउंट* (नैशविल्ले: अबिंग्डन-कोकसबरी प्रैस, 1930), 207. [2]विलियम एफ़. अर्डंट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिच, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियशंस लिटरेचर,* चौथा संशो व विस्तार (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1957), 326. [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1985), 426. [4]आर्किबल्ड थॉमस रॉबर्ट्सन, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 1 (नैशविल्ले: ब्रोडमैन प्रैस, 1930), 61. Thlibo शब्द *thlipsis* का सम्बन्ध (''संकट), जो सताव की ही बात करता है। [5]ऐसी पगडंडी का वर्णन करें जो आपके सुनने वालों को ''आसान लगे।'' मैं छायादार, छोटी-छोटी लाइटों वाले पहाड़ी पथ की कल्पना करता हूं जिसमें हवा में मधुर संगीत सुनाई देता है। [6]जॉर्ज डब्ल्यू. बेली, ''द नैरो गेट एण्ड द स्ट्रेटंड वे,'' *दि प्रीचर'स पीरियोडिकल* (अब *ट्रुथ फॉर टुडे*) (जुलाई 1982): 22. [7]वही, 36. [8]अर्डंट एण्ड गिंगरिच, 773. [9]धनवान, जवान हाकिम, अपना ''सामान'' न छोड़ने को तैयार एक उदाहरण है कि वह यीशु के पीछे चल सके (लूका 18:18-25)। बेशक एक अर्थ में मसीही बनने के समय हम सब अपने साथ काफ़ी ''सामान'' लाते हैं और फिर हमें इससे पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हुए जीवन भर काम करना पड़ता है; परन्तु मन फिराव इस बात की मांग करता है कि हम पाप के प्रति नई सोच और प्रतिदिन यीशु जैसे बनते रहने का निश्चय करके मसीही के साथ आरम्भ करें। [10]मैनफोर्ड जॉर्ज गुजके, *प्लेन टॉक ऑन मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1966), 63.

[11]कोय रोपर, ''हाऊ टू प्लीज़ गॉड,'' ट्रेंट चर्च ऑफ क्राइस्ट, ट्रेंट, टैक्सस, 5 फरवरी 2006. [12]वाइन, 164. [13]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ द सरमन ऑन द माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1978), 196. [14]वाइन, 493. [15]2 पतरस 2:1 देखें जो झूठे *भविष्यवक्ताओं* को झूठे *शिक्षकों* से मिला देता है। [16]वाइन, 367. ''झूठे भविष्यवक्ता'' एक मिश्रित शब्द से लिया गया है जो ''भविष्यवक्ता'' के लिए शब्द के साथ ''झूठा'' के लिए यूनानी शब्द को मिलाता है: pseudo prophetes (वाइन, 493)। [17]स्टॉट,197 से लिया गया। [18]शैतान भी पवित्र शास्त्र में से बता सकता है (मत्ती 4:6)। [19]आमतौर पर वे पवित्र शास्त्र से अलग अर्थ में शब्दों का इस्तेमाल करते हैं पर वे जानते हैं कि सही शब्द क्या हैं। [20]वाइन, 138.

[21]एलन हाईर्स, ''बिवेअर ऑफ़ फाल्स टीचर्स,'' *स्प्रिचुअल सॉर्ड* (अप्रैल 2007): 1. [22]यदि यह शब्दावली आपके सुनने वालों में परिचित है तो आप पूछ सकते हैं, ''हम भेड़ों के लिबास वाले इन भेड़ियों को अपनी आंखों के सामन ऊन उतारने से कैसे दूर रख सकते हैं ?'' [23]वाइन, 347; राबर्टसप, 62 से लिया गया। [24]हेरल्ड फाउलर, *मैथ्यू 1,* बाइबल स्टडी टैक्सटबुक सीरीज़ (जौप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1968), 426. [25]''बुरा'' की जगह KJV में ''भष्ट'' और ''दुष्ट'' है। यह गलत अनुवाद नहीं है पर यह पाठ वनस्पति के बारे में है इसलिए बुरा विचार की बेहतर उपस्थिति हो सकता है। [26]यूहन्ना के दिमाग में विशेष झूठी शिक्षा थी, पर हम उसके शब्दों से सामान्य प्रासंगिकता बना सकते हैं। [27]अन्य शब्दों में, झूठा शिक्षक प्रेम, दया और अनुग्रह जैसे सभी महत्वपूर्ण विषयों की

बात करेगा पर वह कम प्रसिद्ध विषयों जैसे ''धार्मिकता, आत्मसंयम और आने वाले न्याय'' जैसे विषयों पर कभी बात नहीं करेगा (देखें प्रेरितों 24:25)। [28]*डिडेक* एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है ''शिक्षा'' या ''डॉक्ट्रिन।'' डिडेक ''बारह प्रेरितों के द्वारा अन्यजातियों को दी जाने वाली प्रभु की शिक्षा [डॉक्ट्रिन] होने का दावा करती है।'' (जे. आर. माइकल्स, ''अपोस्टोलिक फादर,'' *दि इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडिया,* संशो., संस्क., ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979], 1:207.) [29]डिडेक 11.1–12.5. [30]डिडेक 11.9.

[31]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडल्टन, *दि फोरफोल्ड गॉस्पल आर ए हारमनी ऑफ द फोर गॉस्पल्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 267. [32]बेले, 21.